

धन्य वचन क्या हैं?

बाइबल के बारे में प्रश्न

धन्य वचन पहाड़ी पर दिए हुए उपदेश के आरम्भ में यीशु के द्वारा धन्य होने की आठ उद्घोषणाओं (मत्ती 5:3-12), जिनमें से प्रत्येक का आरम्भ "धन्य हैं वे" से आरम्भ होता है। इस बात पर विवाद है कि वास्तव में धन्य वचनों की संख्या कितनी है। कुछ कहते हैं कि सात, नौ या दस हैं, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी संख्या आठ है (मत्ती अध्याय 5 का 10-12 वचन को एक धन्य वचन मानते हुए)।

"धन्य" के लिए जिस यूनानी शब्द का अनुवाद किया गया है, उसका अर्थ "हर्ष, परमानन्द" से या शाब्दिक रूप से "बढ़ाए जाने के लिए" से है। पहाड़ी उपदेश में, यीशु इस शब्द का उपयोग मात्र सतही प्रसन्नता से कहीं अधिक बढ़कर प्रसन्न होने के लिए संकेत देता है; इस संदर्भ में, "धन्य" होना एक ऐसी अवस्था को उद्धृत करना है, जिसमें आत्मिक भलाई और खुशहाली पाई जाती है। प्रसन्नता एक प्राण के लिए गहरा आनन्द है। वे जो (निर्धन, शोक करने वाले, नम्र, धर्म के भूखे और प्यासे, दयावन्त, शुद्ध मन वाले, मेल करने वाले, और सताए जाने वाले) धन्य होने के प्रथम पहलू का अनुभव करते हैं, धन्य होने के दूसरे पहलू (स्वर्ग का राज्य, शान्ति, पृथ्वी के अधिकारी, दया पाए हुए, परमेश्वर को देखने वाले, परमेश्वर के पुत्र, स्वर्ग के राज्य के अधिकारी) का भी अनुभव करेंगे। धन्य होने वाले उद्धार में भागी और परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करते हुए, स्वर्ग के स्वाद को पूर्व में ही चखने के

अनुभव को पाएँगे। प्रत्येक धन्य वचन को इस अर्थ से भी आरम्भ किया जा सकता है कि "हे आनन्द [या परमानन्द] पाए हुए..."।"

धन्य वचन एक आदर्श वाले शिष्य और दोनों ही वर्तमान और भविष्य में मिलने वाले उसके प्रतिफल का विवरण देता है। इस अनुच्छेद में जिस व्यक्ति का विवरण यीशु करता है, उसका चरित्र और जीवनशैली उन सभी की तुलना में बिल्कुल भिन्न है, जो अभी भी "स्वर्ग के राज्य से बाहर" है। अपने शाब्दिक स्वरूप में, धन्य वचन को पुराने नियम में विशेष रूप से भजन संहिता (1:1; 34:8; 65:4; 128:1) और साथ ही साथ नए नियम (यूहन्ना 20:29; 14:22; याकूब 1:12; प्रकाशितवाक्य 14:13) में भी पाया जाता है।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-beatitudes.html> | English: <https://www.gotquestions.org/beatitudes.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org